पद २२९ (राग: पहाडी - ताल: त्रिताल) वाजवी कैसा हरी वेणु । फिरोनियां गर रर रर रर ।।ध्रु.।। मुरलीध्वनि

पडतां श्रवणीं। होतसे काम दर्द मज। अंगी विषयबाण संचरुनी।

येतो काटा थर रर रर ।।१।। जाय सखे तूं बाहे। आतां त्या

नंदमुलाला। होते मदनउष्णता भारी। पोळतसे चर रर रर रर।।२।। कान्हा गोपाळ गायी। असे यमुनातीराठायीं। माणिक म्हणे व्रजदारा। जाई तेथें भर रर रर रर।।३।।